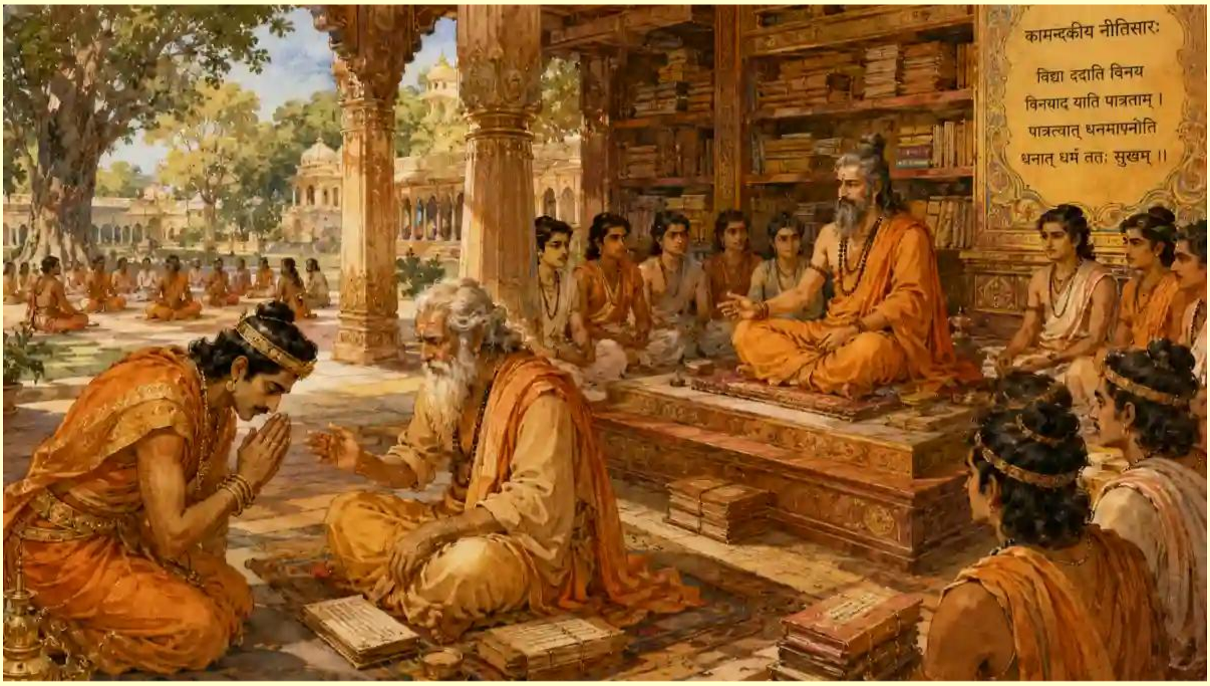
कामन्दकीय नीतिसार – विद्यावृद्धसंयोगप्रकरणम्
(Kamandakiya Nitisara – Vidyā-Vṛddha-Saṃyoga Prakaraṇa)
(The Section on Knowledge, Association with the Wise, and Cultivation of Wisdom)



मूल ग्रंथकार (*Author of the Original Text*): आचार्य कामन्दक (*Ācārya Kāmandaka*)
व्याख्या एवं प्रस्तुति (*Commentary & Presentation*): *Indian Philosophy & Ethics*
लेखक / संपादक (*Author / Editor*): *Anand Singh Dhami*
विषय क्षेत्र (*Subject Area*): भारतीय नीतिशास्त्र, प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन, नेतृत्व-दर्शन एवं नैतिक दर्शन
(Indian Ethics, Ancient Indian Political Thought, Leadership Philosophy & Moral Studies)

संक्षिप्त परिचय (*Brief Introduction*): *कामन्दकीय नीतिसार* भारतीय नीतिशास्त्र परंपरा का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसमें शासन, नेतृत्व, आत्मसंयम, विद्या, गुरु-परंपरा, विनय एवं नैतिक आचरण के सिद्धांतों का विवेचन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में **सर्ग १ के विद्यावृद्धसंयोगप्रकरणम् (श्लोक ६१-७१)** का आलोचनात्मक एवं आधुनिक संदर्भों सहित विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इसका उद्देश्य प्राचीन भारतीय ज्ञान-परंपरा को आधुनिक नेतृत्व, शिक्षा एवं नैतिक चिंतन से जोड़ना है।

ऑनलाइन लेख (*Online Article*): ***https://indianphilosophyethics.blogspot.com/2026/07/guru-vidya-vinaya.html***

संपादकीय भूमिका (Editorial Preface)

यह PDF *कामन्दकीय नीतिसार* के सर्ग १ के द्वितीय भाग (श्लोक ६१–७१) का एक **व्याख्यात्मक एवं आलोचनात्मक अध्ययन संस्करण** है। इस कृति का उद्देश्य शास्त्रीय संस्कृत पाठ का प्रतिस्थापन नहीं है, अपितु उसे आधुनिक पाठकों, शोधार्थियों एवं नेतृत्व-व्यवसायियों के लिए सुगम एवं प्रासंगिक बनाना है।

विशेष सूचनाएँ:

1. **मूल पाठ:** यहाँ प्रस्तुत संस्कृत पाठ, IAST लिप्यंतरण एवं शब्दार्थ उपलब्ध प्रामाणिक संस्करणों (मुख्यतः चौखंबा एवं निर्णयसागर परंपरा) के तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित हैं। विभिन्न पांडुलिपियों में पाठभेद संभव हैं।
2. **व्याख्या का उद्देश्य:** शब्दार्थ एवं भावार्थ मूल ग्रंथ के दार्शनिक एवं नीतिशास्त्रीय आशय को स्पष्ट करने हेतु हैं। यह किसी विशिष्ट टीका-परंपरा का अनुवर्तन न होकर एक स्वतंत्र व्याख्यात्मक प्रयास है।
3. **आधुनिक संदर्भ:** प्रत्येक श्लोक के बाद दिए गए 'आधुनिक संदर्भ' केवल शास्त्रीय सिद्धांतों की समकालीन प्रासंगिकता स्पष्ट करने हेतु हैं। इनका उद्देश्य मूल ग्रंथ पर आधुनिक विचार आरोपित करना नहीं है, अपितु पाठक को एक सेतु प्रदान करना है।
4. **शोध-सीमाएँ:** यह संस्करण कोई आलोचनात्मक पाठ-संपादन (Critical Edition) नहीं है, जिसमें सभी उपलब्ध पांडुलिपियों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया हो। यह एक अध्ययन-सहायक (Study Companion) है।

विषय-सूची

1. प्रस्तावना

"विद्या विनयेन शोभते" — विद्या विनय से शोभायमान होती है। यह कथन मात्र एक कहावत नहीं, बल्कि भारतीय चिंतन-परंपरा का मूल-मंत्र है। आचार्य कामन्दक **भारतीय नीतिशास्त्र परंपरा के प्रमुख आचार्यों में से एक हैं**, जिन्होंने *कामन्दकीय नीतिसार* के माध्यम से **नीति, शासन और नेतृत्व संबंधी विचारों का व्यवस्थित निरूपण किया** है।

कामन्दकीय नीतिसार को अनेक विद्वान **कौटिल्य के अर्थशास्त्र से प्रेरित तथा उसके सिद्धांतों का काव्यात्मक रूपान्तरण** मानते हैं। जहाँ कौटिल्य राज्य-तंत्र की व्यावहारिक संरचना पर बल देते हैं, वहीं कामन्दक नैतिकता, आत्मसंयम, कूटनीति और नेतृत्व के समन्वित स्वरूप को प्रस्तुत करते हैं। **उपलब्ध संस्करणों में *कामन्दकीय नीतिसार* के श्लोकों की संख्या लगभग १२०० के आसपास मानी जाती है। विभिन्न संस्करणों में पाठभेद एवं श्लोक-संख्या में अंतर प्राप्त होता है।** यद्यपि विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रकाशित संस्करणों में श्लोकों की कुल संख्या तथा कुछ पाठों के क्रम में अंतर मिलता है, तथापि ग्रंथ की मूल संरचना एवं दार्शनिक प्रतिपाद्य लगभग समान रहते हैं।

प्रस्तुत PDF में हम **सर्ग १** के *विद्यावृद्धसंयोगप्रकरणम्* (श्लोक ६१–७१) का विस्तृत अध्ययन करेंगे।

पिछले भाग (*इन्द्रियजयप्रकरणम्*) में आत्मसंयम (इन्द्रिय-निग्रह) को नेतृत्व की प्रथम सीढ़ी बताया गया। अब इस भाग में कामन्दक बताते हैं कि आत्मसंयम प्राप्त करने के बाद मनुष्य को अपने जीवन में **विद्या (ज्ञान), गुरु (मार्गदर्शक), सत्संग (अच्छी संगति) और विनय (नम्रता)** को किस प्रकार उतारना चाहिए। यह न केवल राजाओं के लिए, बल्कि प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए है जो अपने परिवार, संगठन या समाज में नेतृत्व करता है।

2. श्रृंखला नेविगेशन (Series Navigation)

कामन्दकीय नीतिसार सर्ग १

भाग	विषय (प्रकरण)	श्लोक संख्या	स्थिति
भाग १	इन्द्रियजयप्रकरणम् (आत्मसंयम)	श्लोक १-६०	प्रकाशित
भाग २	**विद्यावृद्धसंयोगप्रकरणम् (विद्या, गुरु एवं विनय)**	**श्लोक ६१-७१**	**वर्तमान PDF**
भाग ३	सर्ग २ (आगामी विषय)	आगामी	शीघ्र ही

3. गुरु-सेवा और विद्या का प्रारम्भ (श्लोक ६१-६२)

कामन्दक स्पष्ट करते हैं कि आत्मसंयम (पिछले ६० श्लोक) एक खाली स्थान नहीं है, बल्कि विद्या-ग्रहण की नींव है। जैसे जमीन तैयार किए बिना बीज नहीं बोया जा सकता, वैसे ही चंचल इन्द्रियों वाला व्यक्ति गुरु के गंभीर ज्ञान को धारण नहीं कर सकता। इसलिए पहले इन्द्रियों पर विजय, फिर गुरु की शरण।

श्लोक ६१: धर्म, अर्थ और विद्या की उन्नति का प्रथम साधन

मूल संस्कृत:

वर्धयन्निह धर्मार्थौ सेवितौ सद्भिरादरात् ।

निगृहीतेन्द्रियः साधु कुर्वीत गुरुसेवनम् ॥६१॥

IAST लिप्यंतरण:

vardhayanniha dharmārthau sevitau sadbhir ādarāt |

nigṛhītendriyaḥ sādhu kurvīta gurusevanam ||61||

शब्दार्थ (शब्द-कोश):

- **वर्धयन्** — वृद्धि/उन्नति करता हुआ
- **इह** — इस संसार/जीवन में
- **धर्मार्थौ** — धर्म (नैतिकता) और अर्थ (भौतिक संसाधन) — ये दोनों पुरुषार्थ
- **सेवितौ** — जिनका सेवन/आचरण किया गया हो
- **सद्भिः** — सज्जनों/विद्वानों/श्रेष्ठ पुरुषों के द्वारा
- **आदरात्** — आदर, श्रद्धा और सम्मान के साथ
- **निगृहीतेन्द्रियः** — जिसने इन्द्रियों को नियंत्रित कर लिया है
- **साधु** — उचित रीति से
- **कुर्वीत** — करना चाहिए
- **गुरुसेवनम्** — गुरु (शिक्षक/मार्गदर्शक) की सेवा

भावार्थ (गहन विवेचन):

कामन्दक ने मानव-जीवन के दो प्रमुख स्तंभ — *धर्म* और *अर्थ* — का उल्लेख किया है। धर्म के बिना अर्थ अनियंत्रित लोभ बन जाता है, और अर्थ के बिना धर्म अव्यावहारिक (Impractical) हो जाता है। इन दोनों को साधने के लिए *गुरु-सेवा* अनिवार्य है। परंतु गुरु-सेवा तभी सार्थक है जब ग्रहण करने वाला पात्र *निगृहीतेन्द्रिय* (इन्द्रिय-विजेता) हो। क्योंकि गुरु का उपदेश अत्यंत सूक्ष्म होता है; यदि मन काम-क्रोध में भटकेगा तो वह उपदेश सतही सुनाई देगा, गहराई में नहीं उतरेगा। क्रम है: **इन्द्रिय-निग्रह → गुरु-सेवा → विद्या → धर्म-अर्थ की वृद्धि**।

पारंपरिक व्युत्पत्ति: *पारंपरिक भारतीय व्याख्या में "गुरु" को अज्ञानरूपी अंधकार को दूर करने वाले प्रकाशदाता के रूप में देखा गया है। यह व्याख्या आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक परंपरा में अत्यंत प्रचलित है। यह केवल पुस्तकीय ज्ञान नहीं, बल्कि जीवन-दृष्टि का उद्घाटन है।*

मुख्य निष्कर्ष (Key Takeaway):

आत्मसंयम और गुरु-मार्गदर्शन का सम्मिलन ही सफलता का वह अक्षय स्रोत है, जो भौतिक सुख (अर्थ) को आध्यात्मिक स्थिरता (धर्म) से जोड़ता है।

आधुनिक संदर्भ (Modern Context):

आज के कॉर्पोरेट और डिजिटल युग में 'गुरु-सेवा' का अर्थ:

आज सूचना का विस्फोट है, लेकिन ज्ञान का अकाल है। हर किसी के पास स्मार्टफोन और इंटरनेट है, फिर भी दिशाहीनता बढ़ रही है। आधुनिक संदर्भ में 'गुरु-सेवा' का अर्थ है—**मार्गदर्शन की विनम्र स्वीकृति**। चाहे वह कॉर्पोरेट में मेंटरशिप प्रोग्राम हो, किसी अनुभवी सीनियर से सीखना हो, या किसी लाइफ कोच (Life Coach) का सान्निध्य हो। आज सबसे बड़ी समस्या 'अहंकार' (Ego) है, जो लोगों को सलाह लेने से रोकता है। जो व्यक्ति 'मैं सब जानता हूँ' की मानसिकता छोड़कर 'मुझे सीखना है' की मानसिकता अपनाता है, वही डिजिटल भीड़ से अलग खड़ा होता है। आधुनिक कार्यस्थल पर जो कर्मचारी गुरु की तरह मेंटर का सम्मान करता है, उसका करियर तेजी से बढ़ता है, क्योंकि वह दूसरों की गलतियों से सीखकर समय बचाता है। वास्तव में, मौजूदा दौर में इनफ्लुएंसर्स (Influencers) तो हज़ारों हैं, पर *गुरु* दुर्लभ हैं; उनकी सेवा का अर्थ उनके समय का आदर करना और उनके बताए मार्ग पर चलना है।

श्लोक ६२: शास्त्र, गुरु और विनय का संबंध

मूल संस्कृत:

शास्त्राय गुरुसंयोगः शास्त्रं विनयवृद्धये ।

विद्याविनीतो नृपतिर्न कृच्छ्रेष्ववसीदति ॥६२॥

IAST लिप्यंतरण:

śāstrāya gurusaṃyogaḥ śāstraṃ vinayavṛddhaye |

vidyāvinīto nṛpatir na kṛcchreṣv avasīdati ||62||

शब्दार्थ:

- **शास्त्राय** — शास्त्रों/ग्रंथों के ज्ञान (अधिगम) के लिए
- **गुरुसंयोगः** — गुरु का सान्निध्य/संयोग
- **शास्त्रम्** — शास्त्र (ज्ञान-ग्रंथ/विद्या)
- **विनयवृद्धये** — विनय (नम्रता, अनुशासन, शिष्टता) की वृद्धि के लिए
- **विद्याविनीतः** — जो विद्या द्वारा विनीत (संयत और नम्र) बना हो
- **नृपतिः** — राजा/शासक/नेता

- **न** — नहीं
- **कृच्छ्रेषु** — कठिनाइयों, संकटों और आपत्तियों में
- **अवसीदति** — विचलित/पराजित/टूटता नहीं है

भावार्थ (गहन विवेचन):

कामन्दक शिक्षा-प्रक्रिया का सम्पूर्ण मॉडल प्रस्तुत करते हैं:

गुरु-सान्निध्य → शास्त्र-अध्ययन → विनय-उत्पत्ति → विवेक-पूर्ण शासन।

बहुत से लोग शास्त्र पढ़ लेते हैं, पर उनमें अहंकार आ जाता है — यह शिक्षा का अभिशाप है। सच्ची शिक्षा का फल *नम्रता* (Humility) है, अहंकार नहीं। विद्या को 'विनय' में परिवर्तित करने वाला नेता ही विपत्ति (Crisis) में खरा उतरता है। *नृपति* शब्द यहाँ केवल राजा के लिए नहीं, बल्कि किसी भी संस्था के प्रमुख के लिए है। संकट में आत्म-विज्ञान और विनम्रता ही टिकने का एकमात्र आधार है।

व्याकरणिक विशेष: *'विद्याविनीतः' एक गुण-वाचक विशेषण है, जो इस पूरे प्रकरण का हृदय-शब्द है। इसका अर्थ है 'जिसे विद्या ने नम्र बना दिया हो'।*

मुख्य निष्कर्ष (Key Takeaway):

शिक्षा का एकमात्र मानक उसका व्यवहारिक परिणाम है — *विनय*। यदि पढ़ाई के बाद आप अधिक विनम्र नहीं हुए, तो आपके पास केवल सूचना है, विद्या नहीं। यही विद्या संकट में आपकी ढाल है।

आधुनिक संदर्भ (Modern Context):

शिक्षा बनाम संस्कार (विनय) का आधुनिक संकट:

आज की शिक्षा प्रणाली डिग्री, स्किल्स और सैलरी पर केंद्रित है। परिणामस्वरूप, हमारे पास अत्यधिक शिक्षित लोग हैं, लेकिन उनमें सहनशीलता और विनम्रता का अभाव है। आधुनिक संदर्भ में 'शास्त्रं विनयवृद्धये' का अर्थ है—**शिक्षा का अंतिम लक्ष्य चरित्र-निर्माण है, न कि केवल करियर-निर्माण**। आज सोशल मीडिया पर 'ट्रोलिंग' और 'गेट-बैक' की संस्कृति इस बात का प्रमाण है कि ज्ञान के बावजूद विनय लुप्त हो रही है। जो नेता (चाहे वह सीईओ हो या राजनेता) शिक्षा के बाद भी विनम्र बना रहता है, वही संकट (Crisis) के समय टिक पाता है। जो डिग्री तो ले लेते हैं, लेकिन हार नहीं मानते (असहिष्णु हो जाते हैं), वे वास्तव में 'विद्याविनीत' नहीं हैं, बल्कि केवल सूचना-भंडार हैं। विकिपीडिया और यूट्यूब ने सूचना तो मुफ्त कर दी है, पर *संस्कार* तो अनुकरण और शिक्षक के सान्निध्य से ही आते हैं। इसलिए, आज के पारिवारिक और स्कूली शिक्षा में 'विनय' को पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग बनाना समय की आवश्यकता है।

4. वृद्धों का संग, निरंतर अध्ययन और विनय (श्लोक ६३-६८)

अब कामन्दक विद्या-प्राप्ति को और अधिक ठोस बनाते हैं। वे कहते हैं कि विद्या केवल पुस्तकों में नहीं है; वह *अनुभव* (वृद्धों के संग) में, *निरंतरता* (प्रतिदिन सीखने) में और *व्यवहार* (विनय) में निहित है। यह छह श्लोक नेतृत्व के व्यावहारिक पहलुओं को खोलते हैं।

श्लोक ६३: वृद्धों का संग — राजा की सबसे बड़ी शक्ति

मूल संस्कृत:

वृद्धोपसेवी नृपतिः सतां भवति सम्मतः ।

प्रेर्यमाणोऽप्यसद्वृत्तैर्नाकार्येषु प्रवर्तते ॥६३॥

IAST लिप्यंतरण:

vṛddhopasevī nṛpatiḥ satāṃ bhavati sammataḥ |

preryamāṇo'py asadvṛttair nākāryeṣu pravartate ||63||

शब्दार्थ:

- **वृद्धोपसेवी** — जो वृद्धों (अनुभवी जनों) की सेवा/संगति करता है
- **नृपतिः** — राजा
- **सताम्** — सज्जनों/विद्वत्जनों के द्वारा
- **सम्मतः** — सम्मानित/स्वीकृत
- **प्रेर्यमाणः** — उकसाया/प्रभावित किया जाने पर
- **अपि** — भी
- **असद्वृत्तैः** — दुष्ट आचरण वाले लोगों के द्वारा
- **न** — नहीं
- **अकार्येषु** — अनुचित/निषिद्ध कार्यों में
- **प्रवर्तते** — लिप्त/प्रवृत्त होता है

भावार्थ:

यह श्लोक *अच्छी संगति* (Satsang) के अद्भुत प्रभाव को रेखांकित करता है। वृद्ध (अनुभवी) मात्र उम्रदराज़ नहीं हैं, बल्कि वे जीवन के उतार-चढ़ाव के साक्षी हैं। उनका मार्गदर्शन राजा को *दीर्घदृष्टि* (Foresight) देता है। सत्संग का लाभ यह है कि भले ही बुरे लोग (असद्वृत्त) राजा को गलत काम के लिए उकसाएँ, फिर भी वह डिगता नहीं, क्योंकि उसके मन में वृद्धों के उपदेश अंकित हो चुके होते हैं। यह नैतिक *प्रतिरक्षा-तंत्र* (Immune System) है।

मुख्य निष्कर्ष: वृद्धों का संग भविष्य के अनिश्चित जोखिमों के खिलाफ बौद्धिक टीका है। अनुभवी मार्गदर्शक की एक बात हजार किताबों से अधिक मूल्यवान होती है।

आधुनिक संदर्भ (Modern Context):

'वृद्धों' का बहिष्कार बनाम उनकी अनिवार्यता:

आधुनिक दुनिया 'यूथ सेंट्रिक' (युवा-केंद्रित) होती जा रही है। स्टार्टअप कल्चर में 25 साल के फाउंडर्स को हीरो माना जाता है, और 50+ के अनुभवी लोगों को 'पुराने विचारों वाला' बताकर नजरअंदाज कर दिया जाता है। लेकिन आधुनिक संदर्भ में 'वृद्धों का संग' का अर्थ है—**अनुभव के साथ युवा ऊर्जा का सम्मिश्रण (Inter-generational Synergy)**। FTX जैसे कॉर्पोरेट संकटों ने यह प्रश्न उठाया कि संगठनों में स्वतंत्र सलाह, अनुभवी मार्गदर्शन और प्रभावी निगरानी कितनी आवश्यक है। इसके विपरीत, बर्कशायर हैथवे (Berkshire Hathaway) जैसी कंपनी बफेट-मंगर (90+) की वृद्ध सलाह के कारण स्थिर है। आज के संगठनों में 'बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स' में वरिष्ठ विशेषज्ञों को रखना ही आधुनिक 'वृद्धोपसेवी' है। इसके अलावा, 'मेन्टरशिप' कार्यक्रम इसी सिद्धांत पर आधारित हैं — जहाँ अनुभवी कर्मचारी नए कर्मचारियों का मार्गदर्शन करते हैं, जिससे संगठनात्मक स्मृति (Institutional Memory) बनी रहती है और बुरे निर्णयों से बचाव होता है।

श्लोक ६४: प्रतिदिन सीखने वाला ही महान बनता है

मूल संस्कृत:

आददानः प्रतिदिनं कलाः सम्यङ्महीपतिः ।

शुक्लपक्षे प्रविचरञ्छशाङ्क इव वर्धते ॥६४॥

IAST लिप्यंतरण:

ādadānaḥ pratidinaṃ kalāḥ samyaṅ mahīpatiḥ |

śuklapakṣe pravicarañ śaśāṅka iva vardhate ||64||

शब्दार्थ:

- **आददानः** — ग्रहण/स्वीकार करता हुआ (सीखता हुआ)
- **प्रतिदिनम्** — प्रत्येक दिन
- **कलाः** — कलाएँ/विद्याएँ/कौशल (Skills)
- **सम्यक्** — उचित/यथोचित रीति से
- **महीपतिः** — राजा (भूमि का स्वामी)
- **शुक्लपक्षे** — चंद्रमा के बढ़ते कलाओं वाले पखवाड़े (शुक्ल पक्ष) में
- **प्रविचरन्** — विचरण करता हुआ
- **शशाङ्कः** — चंद्रमा
- **इव** — के समान
- **वर्धते** — बढ़ता है

भावार्थ:

यह अत्यंत काव्यात्मक और प्रेरक श्लोक है। कामन्दक *आजीवन सीखने* (Lifelong Learning) की बात करते हैं, जिसे आज की शिक्षा-प्रणाली 'अप-स्किलिंग' (Upskilling) कहती है। चंद्रमा शुक्ल पक्ष में प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा (एक कला) बढ़ता है, किन्तु पूर्णिमा पर वह अपनी संपूर्णता में प्रकाशित होता है। उसी प्रकार राजा/व्यक्ति को प्रतिदिन अल्प-अल्प ज्ञान ग्रहण करते रहना चाहिए। सफलता एक दिन की छलांग नहीं, बल्कि नित्य के छोटे-छोटे कदमों की श्रृंखला है। इस विद्या-वृद्धि के लिए कोई शार्टकट (Shortcut) नहीं है।

मुख्य निष्कर्ष: नियमितता (Consistency) प्रतिभा (Talent) से अधिक महत्वपूर्ण है। आधुनिक उत्पादकता सिद्धांतों में जिसे "क्रमिक सुधार" (Continuous Improvement) कहा जाता है, उसकी भावना इस श्लोक के दैनिक ज्ञान-वृद्धि के संदेश से साम्य रखती है।

आधुनिक संदर्भ (Modern Context):

तकनीकी बदलाव के युग में निरंतर सीखने की अनिवार्यता:

आधुनिक संदर्भ में 'प्रतिदिन सीखना' कोई वैकल्पिक गुण नहीं, बल्कि अस्तित्व (Survival) की शर्त है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और ऑटोमेशन हर दिन नए स्किल्स की मांग कर रहे हैं। जिस प्रकार चाँद प्रतिदिन बढ़ता है, उसी प्रकार आज के पेशेवर को प्रतिदिन अपनी 'अप-स्किलिंग' (Upskilling) करनी पड़ती है। कोई भी डिग्री जीवन भर के लिए पर्याप्त नहीं है। आधुनिक कामकाजी जीवन में 'लर्निंग एजिलिटी' (Learning Agility) ही सबसे बड़ी ताकत है। जो व्यक्ति 'मैंने यह कोर्स कर लिया' कहकर रुक जाता है, वह चंद्रमा के क्षय (अमावस्या) की तरह अप्रासंगिक हो जाता है; वहीं जो 'प्रतिदिन १% बेहतर' (Kaizen) के सिद्धांत पर चलता है, वह उद्योग में अग्रणी बना रहता है। आज की दुनिया में गूगल पर हर सेकंड लाखों सर्च होते हैं; जिसके पास जिज्ञासा है, वही इस सूचना-महासागर में मोती चुन सकता है।

श्लोक ६५: जितेन्द्रिय राजा की कीर्ति आकाश तक पहुँचती है

मूल संस्कृत:

जितेन्द्रियस्य नृपतेर्नीतिमार्गानुसारिणः ।

भवन्ति ज्वलिता लक्ष्म्यः कीर्तयश्च नभःस्पृशः ॥६५॥

IAST लिप्यंतरण:

jitendriyasya nṛpater nītimārgānusāriṇaḥ |

bhavanti jvalitā lakṣmyaḥ kīrtayaś ca nabhaḥspṛśaḥ ||65||

शब्दार्थ:

- **जितेन्द्रियस्य** — जिसने इन्द्रियों (मन, वाणी, क्रोध आदि) को जीत लिया हो
- **नृपतेः** — राजा/नेता के
- **नीतिमार्गानुसारिणः** — नीति (शास्त्र-सम्मत मार्ग) का अनुसरण करने वाले

- **भवन्ति** — होती हैं
- **ज्वलिताः** — प्रकाशमान/दीप्तिमान
- **लक्ष्म्यः** — समृद्धियाँ (ऐश्वर्य, संपत्ति, वैभव)
- **कीर्तयः** — कीर्तियाँ/यश/प्रतिष्ठा
- **च** — और
- **नभःस्पृशः** — आकाश-स्पर्शी (अत्यंत ऊँची)

भावार्थ:

यहाँ कामन्दक *आत्म-विजय* (Self-Mastery) और *बाह्य-सफलता* के बीच कारण-कार्य संबंध स्थापित करते हैं। जो राजा नीति-मार्ग पर चलता है (अर्थात जो नियमों, नैतिकता और शास्त्रों के अनुसार चलता है), उसकी समृद्धि केवल धन (लक्ष्मी) तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह अमर यश (कीर्ति) को भी प्राप्त करता है। 'आकाश-स्पर्शी' का अर्थ है कि उसकी प्रतिष्ठा काल और स्थान की सीमाओं को पार कर जाती है। धन तो चला जाता है, पर यश इतिहास बन जाता है। इन्द्रिय-जय (नैतिक चरित्र) ही यश का आधार है — क्योंकि बिना चरित्र के धन अभिशाप बन जाता है।

मुख्य निष्कर्ष: स्थायी समृद्धि (Sustainable Wealth) केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सामाजिक पूँजी (Social Capital) — यानी विश्वसनीयता और साख — है।

आधुनिक संदर्भ (Modern Context):

डिजिटल सार्वजनिक जीवन में प्रतिष्ठा का संकट:

डिजिटल सार्वजनिक जीवन में प्रतिष्ठा का संकट आज अत्यंत प्रासंगिक है। सोशल मीडिया विवादों और सार्वजनिक प्रतिक्रियाओं के युग में, एक असंयमित बयान वर्षों की मेहनत को क्षण भर में नष्ट कर सकता है। आधुनिक संदर्भ में 'जितेन्द्रिय' होने का अर्थ है—**डिजिटल अनुशासन**। जो नेता सार्वजनिक मंच (Public Platform) पर संयम बरतता है, गुस्से में प्रतिक्रिया नहीं देता, और नैतिकता (Ethics) को बनाए रखता है, उसकी 'कीर्ति' (ब्रांड वैल्यू) आसमान छूती है। आज बाजार में उत्पादों की गुणवत्ता से ज्यादा कंपनी की 'भरोसेमंदता' (Trustworthiness) मायने रखती है। जनसंपर्क (PR), ब्रांडिंग का आधार 'इमेज' होती है, जो अनुशासन से बनती है। टाटा ग्रुप की सदियों पुरानी नैतिकता ही उसे आज भी सबसे भरोसेमंद ब्रांड बनाए हुए है—यही स्थायी लक्ष्मी (समृद्धि) है। इसके विपरीत, कई टेक दिग्गजों के असंयमित नेतृत्व ने उनके ब्रांड मूल्य को गिरा दिया है।

श्लोक ६६: विनय राजा को सर्वोच्च पद तक पहुँचाता है

मूल संस्कृत:

इति स्म राजा विनयं नयान्वितोनिषेवमाणो नरदेवसेवितम् ।

पदं समाक्रामति भास्वरं श्रियःशिरो महारत्नगिरेरिवोन्नतम् ॥६६॥

IAST लिप्यंतरण:

iti sma rājā vinayaṃ nayānvito niṣevamāṇo naradevasevitam |

padaṃ samākrāmati bhāsvaraṃ śriyaḥśiro mahāratnagirerivonnatam ||66||

शब्दार्थ:

- **इति स्म** — इस प्रकार निश्चित रूप से
- **राजा** — शासक
- **विनयम्** — विनय/नम्रता/अनुशासन
- **नयान्वितः** — नीति (राजनीति/व्यूह) से युक्त
- **निषेवमाणः** — सेवन/आचरण करता हुआ
- **नरदेवसेवितम्** — जो स्वयं देवताओं द्वारा भी सेवित/पूजित हो
- **पदम्** — पद/स्थान/प्रतिष्ठा
- **समाक्रामति** — प्राप्त कर लेता है
- **भास्वरम्** — प्रकाशमान/तेजोमय
- **श्रियः** — समृद्धि (लक्ष्मी) का
- **शिरः** — शिखर/सिर
- **महारत्नगिरेः** — महान रत्न-पर्वत के
- **इव** — के समान
- **उन्नतम्** — ऊँचा/उन्नत

भावार्थ:

यह श्लोक बताता है कि राजा का वास्तविक वैभव उसकी *विनय* (Humility) में है, न कि उसके सिंहासन में। जो राजा नीति के साथ विनय का आचरण करता है, वह उस दिव्य पद को प्राप्त करता है जो देवताओं द्वारा भी पूजनीय है। यहाँ 'नरदेवसेवितम्' का आशय अत्यन्त पूजनीय एवं श्रेष्ठ पद से है। इसकी उपमा मणि-पर्वत (रत्नों के पहाड़) के शिखर से दी गई है, जो आकाश को छूता है। समृद्धि (श्री) का शिर (मुकुट) इस विनय के पास ही होता है।

मुख्य निष्कर्ष: नेतृत्व में *सर्वेंट लीडरशिप* (Servant Leadership) ही सबसे ऊँचा स्थान देती है। पद से महानता नहीं, चरित्र से महानता आती है।

आधुनिक संदर्भ (Modern Context):

'सर्वेंट लीडरशिप' (Servant Leadership) का आधुनिक दर्शन:

आधिकारिक पद (Positional Power) आज टिकता नहीं, क्योंकि मिलेनियल्स और जेन-ज़ विनम्र और पारदर्शी नेतृत्व चाहते हैं। आधुनिक संदर्भ में 'विनय' का अर्थ है—**व्यक्तिगत अहंकार को संगठन के उद्देश्य के आगे झुकाना**। आज जो CEO अपनी गलती मान लेता है (जैसे कि कई मॉडर्न कंपनियों के लीडर्स 'वी फेल्ड' कहते हैं), वह कर्मचारियों के दिलों में राज करता है। जो नेता अपनी शक्ति का प्रदर्शन नहीं करता, बल्कि अपनी सेवा (Service) का प्रदर्शन करता है, वह 'महारत्नगिरि' (महान पर्वत) के शिखर जैसा ऊँचा और प्रकाशमान स्थान प्राप्त करता है। कॉर्पोरेट जगत का 'Level-5 Leadership' (जिम कॉलिन्स) बिल्कुल यही कहता है — जहाँ व्यावसायिक इच्छाशक्ति के साथ अत्यधिक व्यक्तिगत विनम्रता का संगम होता है। आज की अस्थिर अर्थव्यवस्था में विनम्र नेता ही कर्मचारियों की वफादारी जीत पाता है।

श्लोक ६७: विनय ही शासन की वास्तविक शक्ति

मूल संस्कृत:

इयं हि लोकव्यतिरेकवर्तिनीस्वभावतः पार्थिवता समुद्धता ।

बलात्तदेनां विनयेन योजयेन्नयस्य वृद्धौ विनयः पुरःसरः ॥६७॥

IAST लिप्यंतरण:

iyaṃ hi lokavyatirekavartinī svabhāvataḥ pārthivatā samuddhatā |

balāt tad enāṃ vinayena yojayen nayasya vṛddhau vinayaḥ puraḥsaraḥ ||67||

शब्दार्थ:

- **इयं हि** — यह (राजसत्ता) निश्चित रूप से
- **लोकव्यतिरेकवर्तिनी** — सामान्य जन-जीवन (लोक) से विलक्षण/अलग स्थिति में रहने वाली
- **स्वभावतः** — अपने स्वभाव से
- **पार्थिवता** — राजसत्ता/क्षत्रिय-शक्ति/अधिकार
- **समुद्धता** — उद्धत/अहंकारी/गर्वित
- **बलात्** — प्रयासपूर्वक (बलपूर्वक)
- **तत्** — इसलिए
- **एनाम्** — इस (सत्ता) को
- **विनयेन** — विनय/नम्रता के द्वारा
- **योजयेत्** — जोड़े/संयत करे
- **नयस्य** — नीति/सुशासन की

- **वृद्धौ** — वृद्धि/समृद्धि में
- **विनयः** — विनय/नम्रता
- **पुरःसरः** — अग्रणी/सबसे आगे रहने वाला

भावार्थ:

यह अत्यंत मनोवैज्ञानिक श्लोक है। कामन्दक कहते हैं कि *सत्ता* (Power) का स्वभाव ही अहंकार उत्पन्न करना है। जब कोई व्यक्ति राजा (शासक) बनता है, तो उसे झुकना मुश्किल हो जाता है, क्योंकि चारों ओर के लोग उसकी चापलूसी करते हैं। सत्ता के साथ अहंकार उत्पन्न होने की संभावना बढ़ जाती है। यह सत्ता-जनित अहंकार (पावर पैराडॉक्स - Power Paradox) विनाशकारी है। इसलिए राजा को *बलात्* (सचेत प्रयास) करके इस अहंकार को विनय से बाँधना चाहिए। यह कोई स्वाभाविक प्रक्रिया नहीं है; इसके लिए तप (अभ्यास) चाहिए। जब यह विनय नीति (अच्छी नीतियों) के साथ जुड़ती है, तो वास्तविक उन्नति होती है। *विनयः पुरःसरः* — अर्थात विनय ही इस उन्नति का नेतृत्व करता है।

मुख्य निष्कर्ष: अहंकार सत्ता का जन्मजात दोष है। विनय इस दोष का एकमात्र इलाज है। जितनी बड़ी शक्ति, उतनी अधिक सजग विनम्रता आवश्यक है।

आधुनिक संदर्भ (Modern Context):

शक्ति का अहंकार (Power-Paradox) और उसका समाधान:

आधुनिक मनोविज्ञान (Psychology) में 'पावर पैराडॉक्स' (Power Paradox) बताता है—जैसे-जैसे लोगों को पावर मिलती है, उनमें सहानुभूति (Empathy) कम होती जाती है और अहंकार बढ़ता है। आधुनिक संदर्भ में कामन्दक का यह श्लोक हमें चेताता है कि **सत्ता अपने आप में धोखा है**। जितना बड़ा पद, उतनी ही बड़ी विनय की परीक्षा। आज के राजनीतिक और कॉर्पोरेट घटनाक्रम इस बात के साक्षी हैं कि जब नेता अपनी 'अजेयता' (Invincibility) का भ्रम पाल लेते हैं, तो परिणाम विनाशकारी होते हैं। कामन्दक कहते हैं कि इस अहंकार को 'बलात्' (सचेत प्रयास) से विनय से बाँधना चाहिए। आधुनिक संगठनों में '360-डिग्री फीडबैक' और 'ओपन-डोर पॉलिसी' इस विनय को बनाए रखने के ही आधुनिक औजार हैं। यदि कोई सीईओ अपनी गलती नहीं मानता, तो संगठन में 'हां में हां' मिलाने वाली संस्कृति (Groupthink) पनपती है, जो विनाश का कारण बनती है।

श्लोक ६८: विनय ही राजा का वास्तविक आभूषण

मूल संस्कृत:

परां विनीतः समुपैति सेव्यतां महीपतीनां विनयो विभूषणम् ।

प्रवृत्तदानो मृदुसञ्चरत्करः करीव भद्रो विनयेन शोभते ॥६८॥

IAST लिप्यंतरण:

parāṃ vinītaḥ samupaiti sevyatāṃ mahīpatīnāṃ vinayo vibhūṣaṇam |

pravṛttadāno mṛdusañcaratkaraḥ karīva bhadro vinayena śobhate ||68||

शब्दार्थ:

- **पराम्** — परम/उत्कृष्ट
- **विनीतः** — विनम्र/अनुशासित
- **समुपैति** — प्राप्त करता है
- **सेव्यताम्** — सेव्यता (लोगों द्वारा सेवा करने की योग्यता, सम्मान)
- **महीपतीनाम्** — राजाओं का
- **विनयः** — विनय/नम्रता
- **विभूषणम्** — आभूषण/अलंकार
- **प्रवृत्तदानः** — जो दान (उदारता) में प्रवृत्त हो
- **मृदुसञ्चरत्करः** — जिसकी सूंड (कर) मृदु/कोमल गति से चलती है (प्रशिक्षित हाथी)
- **करीव** — हाथी के समान
- **भद्रः** — श्रेष्ठ/उत्तम (हाथी की एक जाति)
- **विनयेन** — विनय के द्वारा
- **शोभते** — शोभायमान होता है

भावार्थ:

यहाँ कामन्दक *प्रशिक्षित हाथी* की अद्भुत उपमा देते हैं। हाथी अत्यंत शक्तिशाली होता है, परंतु जब वह प्रशिक्षित (विनीत) होता है, तो उसकी चाल मृदु (सौम्य) होती है और वह जनता के बीच शोभायमान दिखता है। वहीं, बिना प्रशिक्षण का हाथी खतरनाक होता है। उसी प्रकार राजा की शक्ति केवल तभी सुंदर और फलदायी है जब वह विनय से संयमित हो। *विनयो विभूषणम्* — विनय राजा का आभूषण है, मुकुट या राजचिह्न नहीं। एक विनम्र राजा अपने दान और नरम व्यवहार से लोगों के दिलों में राज करता है। यह 'सेव्यता' (सेवा करने की इच्छा उत्पन्न करना) ही सच्ची लोकप्रियता है।

मुख्य निष्कर्ष: ताकत का प्रदर्शन नहीं, बल्कि ताकत पर नियंत्रण (संयम) ही व्यक्ति को शोभायमान और सम्मानित बनाता है। सच्चा नेता जितना शक्तिशाली होता है, उतना ही सौम्य दिखता है।

आधुनिक संदर्भ (Modern Context):

प्रशिक्षित शक्ति (Trained Power) का सौंदर्य:

हाथी की उपमा आधुनिक संदर्भ में **बड़ी-बड़ी टेक कंपनियों और सरकारों** पर लागू होती है। जो संस्थान जितना बड़ा होता है, उसका आचरण (Conduct) उतना ही नरम (Soft) होना चाहिए। आधुनिक अर्थव्यवस्था में, जो ब्रांड अपने ग्राहकों के प्रति विनम्र होता है, जो सॉफ्ट स्किल्स (Soft Skills) में माहिर

होता है, वही 'भद्र' (श्रेष्ठ) कहलाता है। विनय आज का सबसे बड़ा 'सॉफ्ट पावर' (Soft Power) है। एक नेता की वास्तविक सुंदरता उसके पद में नहीं, बल्कि उसके द्वारा दी जाने वाली सहानुभूति और उसके संयमित व्यवहार में है। जैसे प्रशिक्षित हाथी भीड़ में शांत चलता है, वैसे ही सच्चा नेता शोर नहीं मचाता, बल्कि उदाहरण पेश करता है। आज ग्राहक सेवा (Customer Service) की सफलता कर्मचारियों के विनम्र व्यवहार पर निर्भर करती है, न कि तकनीकी विशेषज्ञता पर।

5. गुरु-ज्ञान, सत्संग और विनय का अटूट कवच (श्लोक ६९-७१)

इस अंतिम भाग में कामन्दक तीनों तत्वों — *गुरु, विद्या और विनय* — का एक ऐसा संश्लेषण प्रस्तुत करते हैं, जो शासक को अजेय (Invincible) बना देता है। अब वे बताते हैं कि विद्या का अंतिम उद्देश्य *लोक-कल्याण* है, और विनय एक ऐसा कवच है जो संसाधनों के अभाव में भी विजय दिलाता है।

श्लोक ६९: गुरु, विद्या और महापुरुषों के विचार

मूल संस्कृत:

गुरुस्तु विद्याधिगमाय सेव्यते श्रुता च विद्या मतये महात्मनाम् ।

श्रुतानुवर्तीनि मतानि वेधसाम् असंशयं साधु भवन्ति भूतये ॥६९॥

IAST लिप्यंतरण:

gurus tu vidyādhigamāya sevyate śrutā ca vidyā mataye mahātmanām |

śrutānuvartīni matāni vedhasām asaṃśayaṃ sādhu bhavanti bhūtaye ||69||

शब्दार्थ:

- **गुरुः** — गुरु (शिक्षक)
- **तु** — तो (निश्चय)
- **विद्याधिगमाय** — विद्या की प्राप्ति के लिए
- **सेव्यते** — सेवा की जाती है
- **श्रुता** — सुनी/प्राप्त की गई (विद्या)
- **च** — और
- **विद्या** — ज्ञान
- **मतये** — बुद्धि/विवेक (Intellect) के लिए
- **महात्मनाम्** — महापुरुषों/उदारचेता विद्वानों की
- **श्रुतानुवर्तीनि** — श्रुत (शास्त्रों/वेदों) का अनुसरण करने वाले
- **मतानि** — विचार/निर्णय

- **वेधसाम्** — ब्रह्मा/अत्यंत महान विद्वानों के
- **असंशयम्** — निस्संदेह
- **साधु** — उत्तम/कल्याणकारी
- **भवन्ति** — होते हैं
- **भूतये** — कल्याण/समृद्धि के लिए

भावार्थ:

कामन्दक यहाँ *ज्ञान-तंत्र* (Epistemology) की पूरी प्रक्रिया का चित्रण करते हैं:
(१) **गुरु** — विद्या-प्राप्ति का द्वार है (गुरु सेव्यते विद्याधिगमाय)।
(२) **विद्या** — केवल पढ़ लेना नहीं, बल्कि 'मतये' अर्थात विवेक (Wisdom) उत्पन्न करने के लिए है।
(३) **विवेक** — महात्माओं (महापुरुषों एवं विचारकों) के विचारों को समझने में सहायक होता है।
(४) **विचार** — शास्त्रों के अनुरूप (श्रुतानुवर्ती) होने चाहिए।
(५) **परिणाम** — ऐसे विचार निस्संदेह लोक-कल्याण (भूतये) करने वाले होते हैं।

अर्थात ज्ञान तभी सार्थक है जब वह व्यावहारिक विवेक में बदले, और विवेक तभी प्रामाणिक है जब वह शास्त्र-सम्मत एवं लोक-हितकारी हो। 'वेधसाम्' का तात्पर्य ब्रह्मा जैसे सृष्टिकर्ताओं से है — अर्थात जो ज्ञान सृष्टि-व्यवस्था के अनुकूल हो।

मुख्य निष्कर्ष: ज्ञान (Knowledge) ≠ विवेक (Wisdom)। विद्या का वास्तविक उद्देश्य विवेक है, और विवेक का वास्तविक परिणाम कल्याण है। जो निर्णय समाज के हित में न हों, वे शास्त्र-सम्मत नहीं हो सकते।

आधुनिक संदर्भ (Modern Context):

रणनीतिक निर्णयन (Strategic Decision Making) में शास्त्रों की भूमिका:

आज के डेटा-संचालित (Data-driven) युग में, हम संख्याओं (Numbers) को तो देखते हैं, परन्तु विवेक (Wisdom) को खो बैठे हैं। आधुनिक संदर्भ में 'श्रुतानुवर्तीनि मतानि' का अर्थ है—**केवल अल्पकालिक मुनाफा न देखकर, दीर्घकालिक नैतिक सिद्धांतों के अनुसार निर्णय लेना**। महापुरुषों एवं विचारकों के विचार, जैसे गाँधी के अहिंसा सिद्धांत या टॉम पीटर्स के प्रबंधन सिद्धांत, आज भी प्रासंगिक हैं। आज की एआई (AI) तकनीक भी तभी सार्थक है जब उसके पीछे मानवीय विवेक (Human Judgement) हो। जो कंपनियां केवल शेयरधारकों (Shareholders) के लिए काम करती हैं, वे अस्थिर हो जाती हैं; जो स्टेकहोल्डर्स (Stakeholders - कर्मचारी, समाज, पर्यावरण) के लिए काम करती हैं, वे 'भूतये' (कल्याण) को प्राप्त करती हैं—यही आधुनिक ESG (Environmental, Social, Governance) मानदंडों का मूल है। सतत विकास (Sustainable Development) का विचार भी इसी श्लोक का आधुनिक अनुवाद है।

श्लोक ७०: सद्गुरु की सेवा से नेतृत्व की पात्रता

मूल संस्कृत:

सुनिपुणमुपसेव्य सद्गुरुं शुचिरनुवृत्तिपरो विभूतये ।

भवति हि विनयोपबृंहितो नृपतिपदाय शमाय च क्षमः ॥७०॥

IAST लिप्यंतरण:

sunipuṇam upasevya sadguruṃ śuciranuvṛttiparo vibhūtaye |

bhavati hi vinayopabṛṃhito nṛpatipadāya śamāya ca kṣamaḥ ||70||

शब्दार्थ:

- **सुनिपुणम्** — अत्यंत योग्य/निपुण (गुरु)
- **उपसेव्य** — सेवा करके
- **सद्गुरुम्** — सद्गुरु (सच्चे/उत्तम गुरु)
- **शुचि** — पवित्र/शुद्ध आचरण वाला
- **अनुवृत्तिपरः** — गुरु के अनुसरण/आज्ञापालन में तत्पर
- **विभूतये** — समृद्धि/वैभव के लिए
- **भवति** — होता है
- **हि** — निश्चित रूप से
- **विनयोपबृंहितः** — विनय से संवर्धित/विकसित
- **नृपतिपदाय** — राजा-पद (नेतृत्व) के लिए
- **शमाय** — शांति/लोक-कल्याण/राज्य-सुव्यवस्था के लिए
- **च** — और
- **क्षमः** — योग्य/समर्थ

भावार्थ:

यह श्लोक *पात्रता* (Eligibility) का सूत्र प्रदान करता है। एक सामान्य व्यक्ति कैसे नेतृत्व-योग्य व्यक्तित्व (Leadership Material) बनता है? इसकी अभिव्यक्ति इस प्रकार है: सद्गुरु-सेवा → शुद्ध-आचरण → अनुगमन → विनय → राज्य-योग्यता → लोक-शांति। *विनयोपबृंहितः* — अर्थात विनय ही उसके व्यक्तित्व को बढ़ाने वाला पोषक तत्व है। जो व्यक्ति गुरु की शरण में जाता है और उसके बताए मार्ग पर चलता है, वह न केवल शासन करने के योग्य बनता है, बल्कि लोक-शांति (शमाय) स्थापित करने में भी सक्षम होता है। राज्य का अंतिम लक्ष्य *शांति* है, और शांति के लिए विनम्र शासक की आवश्यकता होती है।

मुख्य निष्कर्ष: सद्गुरु की सेवा और विनय — ये दो गुण मिलकर व्यक्ति को नेतृत्व का अधिकारी बनाते हैं। यह जन्म-सिद्ध अधिकार नहीं, बल्कि अर्जित गुण है।

आधुनिक संदर्भ (Modern Context):

शासन-क्षमता (Governance Capability) का विकास:

आधुनिक दौर में 'नेतृत्व' की परिभाषा बदल गई है। यह केवल 'आदेश देने' (Command) का नाम नहीं, बल्कि 'प्रभावित करने' (Influence) का नाम है। आधुनिक संदर्भ में 'सद्गुरु' एक अच्छा कोच (Coach) या सलाहकार (Consultant) हो सकता है, और 'अनुवृत्ति' (अनुसरण) का अर्थ है—**संगठन के विजन (Vision) के प्रति वफादारी**। जो प्रबंधक 'शुचि' (पारदर्शी और ईमानदार) होता है और अपनी टीम की सेवा करता है, वही वास्तव में 'नृपतिपदाय' (नेतृत्व पद) के लिए योग्य होता है। आज की दुनिया में, अकेला (Lone Wolf) नेता असफल होता है, क्योंकि आज की समस्याएँ (जलवायु परिवर्तन, आर्थिक असमानता) इतनी जटिल हैं कि उन्हें हल करने के लिए विनय, सहयोग और गुरु-ज्ञान की आवश्यकता होती है। 'शमाय' (शांति) आज वैश्विक स्थिरता का पर्याय है। संयुक्त राष्ट्र (UN) के सतत विकास लक्ष्य (SDGs) भी अंततः इसी *शम* (शांति और न्याय) की ओर संकेत करते हैं।

श्लोक ७१: विनय — पराजय से रक्षा करने वाला कवच

मूल संस्कृत:

अविनयरतमादराद्दते वशमवशं हि नयन्ति विद्विषः ।

श्रुतविनयनिधिं समाश्रितस्त नुरपि नैति पराभवं क्वचित् ॥७१॥

IAST लिप्यंतरण:

avinayaratam ādarād ṛte vaśam avaśaṃ hi nayanti vidviṣaḥ |

śrutavinayanidhiṃ samāśritas tanur api naiti parābhavam kvacit ||71||

शब्दार्थ:

- **अविनयरतम्** — अविनय (अहंकार/गर्व) में रत/लिप्त
- **आदरात्** — आदर/सम्मान से
- **ऋते** — रहित/बिना
- **वशम्** — वश/अधीन
- **अवशम्** — विवश/असहाय (करके)
- **हि** — निश्चित रूप से
- **नयन्ति** — ले जाते हैं

- **विद्विषः** — शत्रु/प्रतिद्वंद्वी
- **श्रुतविनयनिधिम्** — श्रुत (शास्त्र-ज्ञान) और विनय (नम्रता) का भंडार (निधि)
- **समाश्रितः** — जिसने उस (भंडार) को धारण/आश्रित कर लिया हो
- **तनुः** — दुर्बल/अल्प-संसाधन/कमज़ोर
- **अपि** — भी
- **न** — नहीं
- **एति** — जाता/प्राप्त होता है
- **पराभवम्** — पराजय/अपमान
- **क्वचित्** — कभी भी (किसी भी स्थिति में)

भावार्थ:

यह इस भाग का अंतिम और अत्यंत शक्तिशाली श्लोक है। कामन्दक दो प्रकार के नेताओं का विरोधाभास (Contrast) प्रस्तुत करते हैं:

- *अविनयी (अहंकारी)* — जो आदर (सम्मान) नहीं करता, जिसे सलाह पसंद नहीं, वह विवश होकर शत्रुओं के अधीन हो जाता है।
- *विनयी* — जो शास्त्र-ज्ञान और विनम्रता का भंडार है, वह यदि **तनुरपि (अल्प संसाधनों वाला होकर भी)** हो, तो भी वह कठिन परिस्थितियों में भी पराभव से बचने की अधिक क्षमता रखता है।

यह *तनुरपि* शब्द आशा का संचार करता है। विजय का आधार संसाधन नहीं, बल्कि *बौद्धिक और नैतिक पूँजी* है। अहंकारी व्यक्ति अपने दुश्मनों को स्वयं न्योता देता है; विनम्र व्यक्ति के पास इतनी बुद्धि होती है कि वह संकटों को टाल देता है या उनका सामना करता है। अहंकार शत्रुओं को जन्म देता है; विनय शत्रुओं को भी मित्र बना लेती है।

मुख्य निष्कर्ष: ज्ञान और विनय का संयोजन सबसे बड़ा सुरक्षा-कवच (Shield) है। चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी विपरीत हों, विद्वान और विनम्र व्यक्ति कठिन से कठिन परिस्थिति में भी अपनी स्थिति बनाए रखने की अधिक क्षमता रखता है।

आधुनिक संदर्भ (Modern Context):

अहंकार (Arrogance) बनाम सुरक्षा (Security) का संगठनात्मक समीकरण:

आधुनिक इतिहास (एनरॉन, लेहमैन ब्रदर्स, और कई अन्य कॉर्पोरेट पतन) इस बात का गवाह है कि अहंकारी और अविनयी संगठन अंततः विद्विषों (प्रतिस्पर्धियों, नियामकों या बाजार की प्राकृतिक शक्तियों) के हाथों पराजित होते हैं। आधुनिक संदर्भ में 'श्रुतविनयनिधि' का अर्थ है—**ज्ञान और विनय का संयुक्त भंडार**। बड़े संसाधनों वाले संगठन भी यदि आत्ममूल्यांकन और विनम्रता खो दें, तो संकट का सामना

कर सकते हैं। सिंगापुर जैसे छोटे संसाधन वाले देश ने ज्ञान और विनय-आधारित नीति से विश्व में सुरक्षित और सम्मानित स्थान बनाया है। साइबर सुरक्षा (Cybersecurity) के युग में भी, अहंकारी संगठन जो अपनी कमजोरियाँ (Vulnerabilities) नहीं मानते, हैकर्स (शत्रुओं) का आसान शिकार बन जाते हैं। आज सफलता का गुप्त मंत्र 'विनम्र बुद्धि' (Humble Intelligence) है—जो आपको दुश्मनों से नहीं, बल्कि आपके अपने अहंकार से बचाता है।

6. सारांश तालिका — मुख्य बिंदु एक नज़र में

श्लोक	शास्त्रीय सिद्धांत (संक्षिप्त)	मुख्य संदेश (Key Takeaway)	आधुनिक प्रासंगिकता (Modern Relevance)
६१	इन्द्रिय-निग्रह → गुरु-सेवा → विद्या → धर्म-अर्थ	आत्मसंयम के बिना गुरु-सेवा अधूरी; गुरु जीवन-दृष्टि देते हैं।	Mentorship & Coaching; Ego-ह्रास; सीखने की विनम्रता ही डिजिटल युग में सफलता की कुंजी है।
६२	गुरु-सान्निध्य → शास्त्र-अध्ययन → विनय-वृद्धि	शिक्षा का फल विनय (नम्रता) है, अहंकार नहीं।	चरित्र-निर्माण बनाम डिग्री-उन्माद; संकट-प्रबंधन में विवेक की भूमिका।
६३	अनुभवियों का संग (वृद्धोपसेवा) → नैतिक सुरक्षा	सत्संग चरित्र का सुरक्षा-कवच है; बुरे लोग प्रभावित नहीं कर सकते।	Inter-generational Synergy; बोर्ड में वरिष्ठ सलाहकारों की अनिवार्यता; Institutional Memory।
६४	प्रतिदिन अल्प-अल्प विद्या-ग्रहण (चंद्रमा-उपमा)	नियमितता (Consistency) महानता की जननी है।	Lifelong Learning, Upskilling, AI युग में अनुकूलनशीलता (Adaptability); Continuous Improvement।
६५	इन्द्रिय-जय + नीति-मार्ग = कीर्ति एवं समृद्धि	स्थायी समृद्धि आर्थिक नहीं, सामाजिक प्रतिष्ठा (Reputation) है।	Brand Value, Digital Discipline, सार्वजनिक विवादों से बचाव; विश्वसनीयता (Trust) ही नई करेंसी है।
६६	विनय + नीति = देव-वंदित सर्वोच्च पद	पद से महानता नहीं, चरित्र से महानता आती है।	Servant Leadership; Level-5 Leadership; कर्मचारी-वफादारी का आधार।
६७	सत्ता स्वभावतः अहंकारी; विनय से उसे वश में करो	सत्ता के साथ अहंकार उत्पन्न होने की संभावना बढ़ जाती	Power Paradox; 360-Degree Feedback; Open-door Policy; Groupthink से बचाव।

		है; विनय उसका समाधान है।	
६८	विनय राजा का आभूषण; प्रशिक्षित हाथी-सा व्यवहार	ताकत पर नियंत्रण (संयम) ही व्यक्ति को शोभायमान बनाता है।	Soft Power; Soft Skills; Customer Centricity; सौम्य व्यवहार ही ब्रांड-इमेज बनाता है।
६९	गुरु → विद्या → विवेक → शास्त्रानुकूल निर्णय → कल्याण	ज्ञान का लक्ष्य विवेक; विवेक का लक्ष्य लोक-कल्याण।	Strategic Decision Making; ESG (Environmental, Social, Governance); Sustainable Development।
७०	सद्गुरु-सेवा + शुद्धाचरण + विनय = नेतृत्व-योग्यता	नेतृत्व जन्म-सिद्ध नहीं, अर्जित गुण है; इसका अंतिम लक्ष्य शांति है।	Governance Capability; Coaching & Mentoring; विजन-अनुसरण (Commitment)।
७१	अहंकारी → शत्रुओं का शिकार; विनयी (संसाधनहीन होकर भी) → अजेय	विद्या-विनय का भंडार ही सबसे बड़ा सुरक्षा-कवच है।	Organizational Resilience; Cybersecurity; Crisis Management; Humble Intelligence।

7. विद्या, विनय और गुरु-कृपा का महा-चक्र (Grand Synthesis)

कामन्दकीय नीतिसार सर्ग १ — विद्यावृद्धसंयोगप्रकरणम् (श्लोक ६१-७१) का अध्ययन करने के बाद हम एक सुस्पष्ट *चक्रीय प्रक्रिया* (Cyclic Process) देख सकते हैं:

1. **आत्म-जय (पिछले भाग से) → गुरु-खोज:** जो इन्द्रियों को जीत लेता है, वही सच्चे गुरु को पहचान सकता है।
2. **गुरु-सेवा → विद्या-प्राप्ति:** सेवा से विनम्रता आती है, विनम्रता से ग्रहण-शक्ति बढ़ती है।
3. **विद्या → विवेक (बुद्धि):** पढ़ा हुआ ज्ञान तभी काम आता है जब वह विवेक में बदले।
4. **विवेक → सत्संग (अनुभवियों का संग):** विवेक अनुभव से परिष्कृत होता है; वृद्धों का संग उसे दिशा देता है।
5. **सत्संग → विनय (नम्रता):** सच्चा ज्ञानी हमेशा विनम्र होता है; विनय ही उसका आभूषण है।
6. **विनय → कीर्ति एवं अजेयता:** विनम्र व्यक्ति सम्मान पाता है और कठिन-से-कठिन परिस्थिति में विजयी बना रहता है।

कामन्दक का मूल मंत्र: *"विद्या विनयेन शोभते"* — विद्या विनय से शोभायमान होती है, और यही विनय एक शासक/नेता का सबसे बड़ा बल है। सेना, कोष, साम्राज्य — ये सब बाहरी हैं; विनय आंतरिक है और शाश्वत है।

8. एक प्रेरणादायक संदेश

"विद्या ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम्। पात्रत्वात् धनमाप्नोति, धनात् धर्मं ततः सुखम्॥"

(अर्थ: विद्या विनय देती है, विनय से पात्रता (योग्यता) आती है, पात्रता से धन (संसाधन) मिलता है, धन से धर्म (सदाचार) और धर्म से सुख (शांति) प्राप्त होती है।)

कामन्दकीय नीतिसार का यह भाग हमें सिखाता है कि:

- **शक्ति** क्षणिक है, **विद्या** स्थायी है।
- **अधिकार** अहंकार देता है, **विनय** प्रतिष्ठा देता है।
- **संसाधन** सुरक्षा नहीं देते; **सत्संग और विवेक** देते हैं।

आज जब हमारे चारों ओर उथल-पुथल (Volatility), अनिश्चितता (Uncertainty), जटिलता (Complexity) और अस्पष्टता (Ambiguity) — यानी VUCA (Volatility, Uncertainty, Complexity and Ambiguity) की दुनिया है — कामन्दक का यह मार्गदर्शन हमें बताता है कि बाहरी हथियारों (पैसा, तकनीक, पद) से नहीं, बल्कि आंतरिक गुणों (विनय, निरंतर सीखना, अनुभव का सम्मान) से ही कोई व्यक्ति या समाज सुरक्षित रह सकता है।

क्या आप आज से एक 'विद्याविनीत' बनने का प्रण लेते हैं?

9. लर्निंग फ्लो डायग्राम (सीखने का संपूर्ण प्रवाह)

इन्द्रिय-निग्रह (पिछले भाग से)

⬇

गुरु-सेवा - (श्लोक ६१)

⬇

शास्त्र-अध्ययन - (श्लोक ६२)

⬇

वृद्ध-संग / अनुभव - (श्लोक ६३)

⬇

प्रतिदिन सीखना - (श्लोक ६४)

⬇

नीति-पालन - (श्लोक ६५)

⬇

विनय/नम्रता - (श्लोक ६६, ६७, ६८)

↓

विवेक एवं लोक-कल्याणकारी निर्णय- (श्लोक ६९, ७०)

↓

अजेयता / स्थायी प्रतिष्ठा - (श्लोक ७१)

10. संदर्भ

- कामन्दकीय नीतिसार (मूल संस्कृत) — सर्ग १ | चौखंबा संस्कृत सीरीज़, वाराणसी
- कामन्दकीय नीतिसार (निर्णयसागर संस्करण) | मुंबई, १९०७

संपादकीय टिप्पणी: उपलब्ध विभिन्न पाठ-संस्करणों (Recensions) में कुछ श्लोक-पाठ एवं क्रम में सूक्ष्म पाठभेद मिलते हैं। इस पुस्तक में प्रयुक्त पाठ मुख्यतः चौखंबा एवं निर्णयसागर परंपरा के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

- *Kamandakiya Nitisara (English Translation)* — Dr. Shama Shastri | Oriental Research Institute, Mysore
- *The Kautiliya Arthashastra (Part I–III)* — R.P. Kangle | University of Bombay, 1965–1972
- *The Arthashastra (Penguin Classics)* — L.N. Rangarajan | Penguin Books, 1992
- *Good to Great* — Jim Collins | HarperCollins, 2001 (Level-5 Leadership)
- *Leaders Eat Last* — Simon Sinek | Portfolio, 2014 (Servant Leadership)
- *The Effective Executive* — Peter Drucker | HarperBusiness, 2006 (Decision Making)
- *Hit Refresh* — Satya Nadella | HarperBusiness, 2017 (Learn-it-all culture)
- Patrick Olivelle — *King, Governance, and Law in Ancient India* तथा *The Arthaśāstra: Selections from the Classical Indian Work on Statecraft* | Oxford University Press
- *भारतीय राजनीति शास्त्र का इतिहास* — के.पी. जायसवाल | हिंदी अनुवाद, १९३४
- *Ancient Indian Political Thought* — V.P. Varma | Lakshmi Narain Agarwal, 1959
- *Hindu Polity: A Constitutional History* — K.P. Jayaswal | Motilal Banarsidass, 1978
- गीताप्रेस, गोरखपुर (Gita Press) — gitapress.org
- Digital Library of India — dli.gov.in
- Sanskrit Documents Project — sanskritdocuments.org

- Muktabodha Indological Research Institute — muktabodha.org
- Internet Archive — archive.org

11. संबंधित लेख (Internal Linking - आंतरिक संदर्भ)

विषयगत क्रम में अधिक गहन अध्ययन के लिए कृपया निम्नलिखित लेख पढ़ें:

1. कामन्दकीय नीतिसार – इन्द्रियजयप्रकरणम् (सर्ग १ भाग १)
2. कामन्दकीय नीतिसार: सच्चे राजा के गुण
3. कामन्दकीय नीतिसार: राजा के सेवकों के आवश्यक गुण
4. कामन्दकीय नीतिसार: बुरे सलाहकारों का विनाशकारी प्रभाव
5. कामन्दकीय नीतिसार: विवेकहीन राजा और उसके प्रभाव
6. कामन्दकीय नीतिसार: राजा के अनियंत्रित मन के दुष्परिणाम

अगले भाग में

कामन्दकीय नीतिसार सर्ग २

(अगला PDF शीघ्र उपलब्ध होगा)

श्रृंखला में आगे बढ़ें:

- 📖 **पिछला भाग** (इन्द्रियजयप्रकरणम्)
- 📚 **यह भाग** (विद्यावृद्धसंयोगप्रकरणम्)
- ⏭ **अगला भाग** (सर्ग २ - आगामी)

13. संस्करण संबंधी सूचना

संस्करण: प्रथम संस्करण (Version 1.1)

प्रकाशन वर्ष: 2026

संपादकीय टिप्पणी:

इस पुस्तक में प्रस्तुत संस्कृत पाठ, शब्दार्थ एवं व्याख्या उपलब्ध प्रमुख पाठ-संस्करणों, टीकाओं एवं आधुनिक शोध के तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित हैं। जहाँ विभिन्न संस्करणों में पाठभेद उपलब्ध हैं, वहाँ सर्वाधिक प्रचलित एवं प्रामाणिक पाठ का अनुसरण किया गया है।

🙏 ॐ

इति कामन्दकीय नीतिसारस्य सर्ग १ (विद्यावृद्धसंयोगप्रकरणम्) सम्पूर्णः

🙏 ॐ